'परिंदे' कहानी एक समीक्षात्मक अध्ययन

डॉ. मनोज कुमार, सहायक प्रबंधक (राजभाषा एवं जनसंपर्क), वेस्टर्न कोलफील्ड्स लिमिटेड, नागपुर

'परिंदे' कहानी के रचनाकार निर्मल वर्मा हैं।इनका काल 1929 से 2005 ई. है। इनका जन्म हिमाचल प्रदेश के शिमला में हुआ था।'परिंदे' कहानी का प्रकाशन 1957 ई. में हंस पत्रिका के अर्द्ध-वार्षिकांक के हुआ, जबकि 'परिंदे' कहानी संग्रह का प्रकाशन 1960 ई. में हुआ, जिसमें अनेक कहानियां संकलित हैं।'परिंदे'यानी पक्षी-पक्षी उड़ते है चहकते है उनकी धरती है, उनकी हरियाली है।गहराई से विचार करने पर यह कहानी न तो चरित्र प्रधानदिखाई देती है और न ही विचार प्रधान, इसके बाद भी यहकहानी पाठकों पर अपना गहरा प्रभाव छोड़ती है। एक प्रकार का नयापन लिए हुए यह कहानीअपने भावबोध के स्तर पर बेजोड़ है। यह न सिर्फ 'परिंदे' कहानी की खास बात है, बल्कि एक कथाकार के रूप में यह निर्मल वर्मा की भी विशेषता है कि उनकीकहानियाँ पाठक को एक ऐसे यथार्थ का दर्शन करवाती है, जो अबतक 'सूक्ष्म' माना गया था और वहाँ तक कहानियों की पहुँच नहीं थी। ये मानव-मन केअंदर का यथार्थ था। डॉ. नामवर सिंह लिखते हैं कि "अभी तक जोकहानी सिर्फ कथा कहती थी या कोई चरित्र पेश करती थी अथवा एक विचार को झटका देती थी, वही निर्मल के हाथों जीवन के प्रति एक नया भावबोध जगाती है; साथ ही ऐसे दुर्लभ अनुभूति चित्र प्रदान करती है जिन्हें हम कम-से-कमहिन्दी में कहानी के माध्यम से प्राप्त करने के अभ्यस्त नहीं थे।"[1]

हिन्दी कथा-साहित्यमेंनिर्मल वर्मा की कहानी 'परिंदे' को काफीप्रतिष्ठित स्थान प्राप्त है।हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध आलोचक नामवर सिंह ने 'परिंदे' कहानी को हिंदी की पहली नयी कहानी माना है और निर्मल वर्मा को हिंदी के प्रथम नया कहानीकार माना है। 'परिंदे' एक लंबी और प्रतीकात्मक कहानी है। डॉ. गोपालराय ने 'परिंदे' कहानी को टूटे हुए प्रेम का प्रतीक कहा है।पहाड़ों के सौंदर्य के बीच इनकी बाल्यावस्था के दिन व्यतीत हुए और आरंभिक शिक्षा भी यही हुई। अतीत हमेशा से इनका प्रिय विषय रहा है। उनके पात्र दार्शनिक ढंग से अतीत से जुड़े रहते हैं। उनके पात्र यादों की गली में खो जाते है। स्मृतियों के भंवर में डूब जाते है उतर जातेहैं।

'परिंदे' के मुख्य पात्रों के बारे में :-

'परिंदे' में लतिका कहानी की मुख्य पात्र हैं, जो पहाड़ी स्कूल में वार्डन है। ये कहानी की नायिका है।पहाड़ी इलाका, 'हॉस्टल' लड़कियां और इन्हें देखती लतिका। छुट्टियों में मैडम लतिका,घर नहीं जाती।इस कहानी के एक हिस्सा का संबंध मैडम लतिका से है। उसका अकेलापन पूरी कहानी में प्रसारित है। वह हँसना भूल गई है।लतिका अकेली रहकर अतीत में जीती है।अपने अतीत के समुद्र में गोता लगाती रहती है।इस करुणामय, भावनामय,प्रेममय अतीत को वह कभी भी विस्मृत नहीं कर सकती है। उसका अतीत ही उसका चैन है उसका शुकून है।उसका वर्तमान है और शायद भविष्य भी है।

अगर कहानी के पात्रों पर गौर करें तो लतिका, डॉ. मुकर्जी सभी अपना दर्द लिए जीते है। ऊपर से हंसने की असफल कोशिश करने वाले और अन्दर ही अन्दर रोते हुए चेहरों पर आने वाली बारीक से बारीक प्रतिक्रियाओं का प्रभाव समेटने का प्रयास काफी प्रभावशाली बन गया है।डॉ. मुकर्जी आधे बर्मा थे जो बर्मा से आये थे और बर्मा को भूल नहीं सके थे। वे बार-बार कहते थे कि एक बार बर्मा जरुर जाऊंगा।कहानी का दूसरा अंश उनसे संबंधित है। बर्मा पर जापानियों का आक्रमण होने के बाद वह इस छोटे से पहाड़ी शहर में आ बसे थे।कुछ लोगों का कहना है कि बर्मा से आते हुए रास्ते में उनकी पत्नी की

मृत्यु हो गई। उनके मन में भी अतीत है। लेकिन वे अपना अतीत कभी प्रकट नहीं करते है।बातों से पता चलता है कि उनके दिल में भी अतीत के प्रति मोह है,प्रेम है तभी तो वे मिस वुड से कहते हैं - "जड़ें कहीं नहीं जमती, तो पीछे भी कुछ नहीं छूट जाता।"उनके संवाद से पता चलता है कि वे अन्दर से उदास हैं।

'परिंदे'कहानी पर कामू के 'एबसर्ड' का भी प्रभाव परिलक्षित होता है।कहानी के लगभग सभी पात्र अपने संवाद से ऐसी सूचना देते हैं कि वो एक प्रकार कानिरर्थक जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। वो बार-बार जीवन के मूल्य की तलाश करते हैं। ये पात्र बुढ़ापा और मृत्यु से डरे हुए लगते हैं। डॉ.मुकर्जी को कई बार लगता है कि वह क्यों है? उसके जीवन काउद्देश्य क्या है? वो क्या करे? डॉ.मुकर्जी मि. ह्यूबर्ट से बात करते समय कहते हैं- "क्या तुम नियति में विश्वास करते हो, मि. ह्यूबर्ट?"[2] "मैं कभी-कभी सोचताहूँ, इंसान जिंदा किसलिए रहता है – क्या उसे कोई औरबेहतर काम करने को नहीं मिला?" [3]

'परिंदे'के पात्र अपनी विवशता से मुक्त होनाचाहते हैं, लेकिन स्थितियों के सामने लाचार हैं। हालाँकिनामवर सिंह 'परिंदे'के पात्रों की स्वतन्त्रता या मुक्ति की आकांक्षा के प्रश्नको समकालीन विश्व-साहित्य के प्रश्नों के ही समानान्तर रख कर विचार करने के पक्षमें हैं । उनके अनुसार "स्वतन्त्रता या मुक्ति का प्रश्न, जो समकालीन विश्व-साहित्य का मुख्य प्रश्न बन चला है, निर्मल की कहानियों में प्रायः अलग-अलग कोण से उठाया गया है ... येकहानियाँ जीवन की विभिन्न स्थितियों के संदर्भ में आज के सबसे बड़े मानव-मूल्य, मानव-मुक्ति को परिभाषित करती है।"[4]

कहानी की एक पात्र सुधा है जो होस्टल में रहने वाली सबसे लोकप्रिय लड़की है। एक पात्र जूली है, जूली भी होस्टल में रहती है। एक पात्र करीमुद्दीन है जो होस्टल में नौकर है।मि. ह्यूबर्ट पियानो के शिक्षक हैं, वे मन से पियानो बजाते थे। कहानी में स्कूल की प्रिंसिपल मिस वुड हैं, सभी इसे ओल्डमेड कहते थे। एक गरीश नेगी भी हैं जो कुमाऊँ रेजीमेंट कैप्टन थे, जिनसे लतिका प्रेम करती थी। एक विमान दुर्घटना में गिरीश नेगी की मृत्यु हो जाती है।

'परिंदे' कहानी का सारांश :-

परिंदे कहानी की नायिका लतिका एक पहाड़ी कान्वेंट स्कूल में शिक्षिका है। जैसाकि पहले ही बताया जा चूका है कि यह एक नायिका प्रधान कहानी है। वह लड़कियों के होस्टल में रहती है। किन्तु लड़कियों का सामीप्य उसे अच्छा नहीं लगता है। उसका प्रेमी कैप्टन गरीश नेगी लड़ाई के समय विमान दुर्घटना में मर चूका है। उसकी यादें लतिका को बेहद सालती हैं और लतिका का जीवन उसके बिना टूट हुआ-सा लगता है। मि. ह्यूबर्ट लतिका के प्रति आकृष्ट होता है और उसे प्रेम पत्र भी लिखता है। डॉ. मुखर्जी की आशक्ति मिस वुड के प्रति है। डॉ. मुखर्जी की पत्नी का देहांत हो चूका है।लतिका को एक दिन अपनी छात्रा जूली का प्रेम पत्र प्राप्त होता है, वह उसे वापिस उसे उसके तकिये के नीचे रख देती है।

'परिंदे' का वातवरण एवं संप्रेषण :-

अगर इस कहानी के वातावरण को ध्यान से समझे तो वातावरण का चित्रण काफी अच्छा हुआ है। पहाड़ी इलाका है, सर्दी की छुट्टियों में पत्तों की सायं-सायं करती आवाज है। पिकनिक के लिए भूला-देवी के मंदिर का वर्णन है। पहाड़ी इलाका में वर्षा का क्या क्या ठिकाना कब वर्षा आ जाएगी । 'बुरूस के फूल, चीड़ के पत्ते बहते नाले यह सब दृश्य प्रकृति की ओर मोड़ देते हैं। जब मेघाच्छन्न आकाश में सरकते हुए बादलों के पीछे पहाड़ियों के झुंड कभी ऊपर आते थे, कभी छिप जाते थे।इस प्रकार पूरी कहानी में प्रकृति तथा वातावरण काफी रोचक ढंग से किया गया है।

संप्रेषण की दृष्टि से 'परिंदे' कहानी जटिल ठहरती है। इसका एक मात्रतो नहीं, लेकिन महत्वपूर्ण कारण इसकी सांकेतिकता है। लेखक प्रतीकोंका प्रयोग करता है। 'सांकेतिकता' नई कहानी की एक प्रमुख विशेषता है।नामवर सिंह मानते हैं कि इस दौर की अधिकांश कहानियों में सांकेतिकता भरी हुई है।हालाँकि ऐसा भी नहीं है कि पिछली पीढ़ी के रचनाकारों ने सांकेतिकता का प्रयोग नहींकिया था। उनके अनुसार "सांकेतिकता का सहारा पिछली पीढ़ी के लेखक कभी-ही-कभी लेते थे, जबकि आज का लेखक अक्सर इसका सहारा लेता है। ... आज की कहानी 'आधार-भूतविचार' का केवल अंत में संकेत नहीं करती; बल्कि नयी कहानी कासमूचा रूप-गठन (स्ट्रक्चर) और शब्द-गठन (टेक्स्चर) ही सांकेतिक है। ... नयी कहानीसंकेत करती नहीं, बल्कि स्वयं संकेत है।"[5]

'परिंदे' कहानी का उद्देश्य :-

'परिंदे' कहानी के माध्यम से निर्मल वर्मा ने अपना उद्देश्य भी प्रकट किया है। प्रेमी के मर जाने के बाद अतीत को याद कर लतिका पूरे संसार में स्वयं को मिसफिट पाती है निर्मल वर्मा की मान्यता है कि अतीत का मोह व्यथ है मरे हुए के साथ मरना बेवकूफी है। शून्यता का अनुभव मनुष्य के जीवन में निराशा और अंधकार के सिवाय कुछ नहीं लाता। अतः अतीत को जब तक हम विस्मृत नहीं करते हमें भविष्य में आगे कदम ठीक ढंग से नहीं बढ़ा सकते हैं।अतीत को याद जरूर किया जाए लेकिन अतीत के साथ ही चिपक कर रहना यह बेवकूफी है। अतीत को भूलाकर भविष्य की कामनाएं रची जाए यही संदेश यह कहानी हमें देती है।

निर्मल वर्मा पाठकों को इन चरित्रों के मन की गहराइयों मेंउतारने का प्रयास ही नहीं करते,बल्कि सफल भी होतेहैं। इस संदर्भ में आलोचक नामवर सिंह लिखते हैं "उन्होंने प्रचलित कहानी-कला केदायरे से भी बाहर निकलने की कोशिश की है, यहाँ तक कि शब्द कीअभेद दीवार को लांघकर शब्द के पहले के 'मौन जगत' में प्रवेश करने का भी प्रयत्नकिया है और वहाँ जाकर प्रत्यक्ष इंद्रिय-बोध के द्वारा वस्तुओं के मूल रूप कोपकड़ने का साहस दिखलाया है। इसीलिए उनकी कहानी-कला में नवीनता है"[6]

'परिंदे' एक प्रतीकात्मक कहानी :-

'परिंदे' कहानी के माध्यम से निर्मल वर्मा से अपना उद्देश्य 'परिंदे' कहानी में अनेक जगह पर 'छाया', 'धुंध' और 'कोहरे' भी प्रतीक के रूप में आए हैं। ये प्रतीक अवसादपूर्ण स्थितियों को औरगाढ़ा करते हैं। प्रतीक अबतक कविता की ही चीज हुआ करती थी, लेकिन 'परिंदे' कहानी में प्रतीकों की बहुलता से पाठगम्यताके स्तर परजरूर जटिलता आयी है, लेकिन अगर कहा जाय कि इन प्रतीकों से निर्मल वर्मा ने व्यक्ति-मन के भीतरी द्वन्द्वों को दिखाने में सफलताअर्जित की है तो शायद ही किसी को कोई संदेह होगा।

'परिंदे' कहानी की भाषा :-

निर्मल वर्मा की भाषा इस कहानी में भावानुकूल है। कही भाषा चिन्तन प्रधान है, कहीं रूमानी।परिन्दे की कहानी, रूमानी बोध को चित्रित करती है। कुल मिलाकर अलंकृत भाषा है, मानवीय करण है, प्रतीक और बिम्ब है। प्रवासी होने के कारण इनके कथ्य शिल्प और भाषा में प्रवासीय प्रभाव स्पष्ट दिखलाई पड़ता है।आधुनिकता-बोधकी दृष्टि से हो या संवेदना की दृष्टि से या फिर भाषा की ही दृष्टि से, 'परिंदे' नई कहानी आंदोलन की प्रतिनिधि कहानी मानी जा सकती है। इसमेंसांकेतिकता, प्रतीकात्मकता और बिम्बात्मकता का प्राधान्य है।पहले ये कविता की चीज हुआ करती थी, लेकिन कहानी मेंइसका प्रयोग कर लेखक ने मन के अंदर के यथार्थ को बखूबी पकड़ा है । देखा जाय तो यहीइसका नयापन है जिससे ये पुरानी कथागत रूढ़ियों का अतिक्रमण करती है तथा नवीनमूल्यांकन की माँग करती है।

'परिंदे' कहानी प्रमुख कथन:-

- मरने से पहले मैं एक दफा बर्मा जरुर जाऊंगा।– डॉ. मुकर्जी
- सब लड़कियाँ एक जैसी होती हैं, बेवकूफ और सेंटीमेंटल।– डॉ. मुकर्जी
- हुबर्ट क्या तुमने कभी महसूस किया है कि एक अजनबी की हैसियत से पराई जमीन पर मर जाना काफी खौफनाक है। - डॉ. मुकर्जी
- जंगल की आग कभी देखी है मिस वुड..... एक अलमस्त नशे की तरह धीरे-धीरे फैलती जाती है। - डॉ. मुकर्जी
- लेकिन डाक्टर कुछ भी कह लो अपने देश का सुख कहीं और नहीं मिलता।– मिस वुड
- सब कुछ होने के बावजूद वह क्या चीज है जो हमें चलाये चलती है। जो छाया-सी उस पर मंडराती रहती है, न स्वयं मिटती है, न उसे मुक्ति दे पाती है।– लतिका

'परिंदे' कहानी के संदर्भ में आलोचकों के मत :-

- परिंदे प्रेम की टीस से युक्त अंतर्मन की पीड़ा को चित्रित करने वाली मार्मिक कहानी है।– डॉ. गोपालराय
- परिंदे केवल एक प्रेम कहानी भर नहीं है, यह दो प्रकार के दर्शन के बीच टकराहट की कहानी है।- डॉ. सत्यकाम
- परिंदे खूबसुरत भाषा में रचित प्रेम और मानवीय संवेदनाओं को चित्रित करने वाली कहानी है।– राजेन्द्र यादव
- परिंदे मानवीय टीस व पीड़ा का उद्गार करने वाली कहानी है, निश्चित रूप से यह पहली नयी कहानी है।– नामवर सिंह

संदर्भ सूची :-

1. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, पृष्ठ संख्या – 54
2. श्रेष्ठ हिन्दीकहानियाँ (1950-1960), खगेन्द्र ठाकुर (संपादक), पृष्ठ संख्या – 68
3. श्रेष्ठ हिन्दीकहानियाँ (1950-1960), खगेन्द्र ठाकुर (संपादक), पृष्ठ संख्या – 68
4. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, पृष्ठ संख्या – 53
5. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, पृष्ठ संख्या – 32-33
6. कहानी: नई कहानी, नामवर सिंह, पृष्ठ संख्या – 64